<u>बाल मनोविज्ञान/बाल विकास के क्षेत्र</u>

Dr. Suheli Mehta, Associate Professor, Dept. of Home Science, MMC
E-Content for B.A, Part I

बाल मनोविज्ञान बालक के मन का अध्ययन करता है मानव विकास का अध्ययन मनोविज्ञान की जिस शाखा के अंतर्गत किया जाता है उसे बाल मनोविज्ञान कहा जाता है परंतु अब मनोविज्ञान की वह शाखा बाल विकास कही जाती है|

करामाइकेल(L.carmichael 1968) ने बाल विकास की समस्याओं का उल्लेख करते हुए कहा है कि बाल मनोवैज्ञानिक मुख्यत: 7 समस्याओं का अध्ययन करते है-

1. विकासशील मानव के मौलिक क्रियाएं और गतिशीलता
2. बालक का वातावरण पर प्रभाव
3. वातावरण का बालक पर प्रभाव
4. विकासात्मक प्रक्रियाओं का क्रमिक समकालीन वर्णन
5. साथियों प्रक्रियाओं की दीर्घकालीन प्रणाली द्वारा वर्णन
6. व्यक्ति का किसी भी आयु स्तर पर मापन

व्यक्ति की संपूर्ण पृष्ठभूमि में उसका लेखा-जोखा प्राप्त करना|

<u>विषय सामग्री या क्षेत्र</u>

(1) विकासशील मानव की आधारभूत यांत्रिकी और गतिशीलता काअध्ययन-

इस समस्या के अंतर्गत विभिन्न विकास अवस्था और विभिन्न विकास प्रकारों एवं इनकी गतिशीलता और मैकेनिज्म का अध्ययन किया जाता है विकास की मुख्य अवस्थाएं होती हैं जन्म से पूर्व की अवस्था और इस विकास अवस्था के मुख्य तीन भाग है गर्भधारण से 2 सप्ताह तक की अवस्था 3 सप्ताह से 24 सप्ताह तक की अवस्था और जन्म के पश्चात व्यवस्था

इस विकास अवस्था की 5 अवस्थाएं हैं -

शैशवावस्था,

बचपन,

बाल्यावस्था,
पूर्व किशोरावस्था से
किशोरावस्था तब की अवस्था।

*जन्म से पूर्व की विकास आवस्था में मुख्य: तीन प्रकार की विकास प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है शारीरिक विकास गत्यात्मक विकास तथा संवेदानिक विकास|
* जन्म से बाल्यावस्था तक शारीरिक मानसिक संवैधानिक संवेगात्मक सामाजिक नैतिक गत्यात्मक और भाषा संबंधी विकास का अध्ययन किया जाता है|
*विकास में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों में अंतर्निहित मैकेनिज्म का अध्ययन किया जाता है|

(2) वातावरण और बालक-

बालक विकास में इस समस्या के अंतर्गत दो प्रकार की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है प्रथम यह कि बालक का वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा द्वितीय यह कि वातावरण बालक के व्यवहार व्यक्तित्व तथा शारीरिक विकास आदि को किस प्रकार प्रभावित करता है वातावरण में बालक एक उच्च संगठित उर्जा तंत्र है।
बालक अपने चारों ओर के सामाजिक पर्यावरण को सर्वाधिक प्रभावित करता है।

(3) बाल व्यवहार और अंतः क्रियाएं-

बाल विकास के अध्ययन क्षेत्र में अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं का अध्ययन भी होता है बालक का व्यवहार होता है तथा उसकी विभिन्न शारीरिक और मानसिक योग्यता और विशेषताओं में क्रमिक विकास होता रहता है इस दशा में स्वभाविक है कि बालक और उसके वातावरण में समय-समय पर अंता क्रियाएं होती रहें|

(4) बालक की अंत:क्रियाएँ –

उसके परिवारजनों के साथ, उसके पड़ोसियों के साथ, उसके खेल के साथियों के साथ , अध्यापकों और परिचितों के साथ वह किसी ना किसी प्रकार की अंत: क्रियाएं अवश्य करता है।
मानसिक प्रक्रियाएँ बाल विकास में बालक के विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जैसे प्रत्यक्षीकरण स्मृति चिंतन साहचर्य अधिगम तथा कल्पना आदि ।

(5)वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन-

बाल विकास में वैयक्तिक भिन्नता तथा इससे संबंधित समस्याओं का अध्ययन भी किया जाता है यह समस्या है शरीर रचना वैयक्तिक भिन्नताएं, योग्यताएं मानसिक प्रक्रिया, संवेग और विभिन्न सामाजिक व्यवहार और वैयक्तिक भिन्नताएं |

(6)अध्ययन प्रणालियां-

बाल विकास की मुख्यतः दो अध्ययन प्रणालियां प्रचलित हैं-
समकालीन अध्ययन प्रणाली
दीर्घकालीन अध्ययन प्रणाली

(7) व्यक्ति का निर्धारण या मूल्यांकन-

बाल विकास के क्षेत्र में बालकों के विभिन्न मानसिक और शारीरिक मापन तथा मूल्यांकन से संबंधित समस्याओं का अध्ययन भी किया जाता है ।

* मनोविज्ञान के क्षेत्र में मापन और मूल्यांकन के लिए अनेक ब्रह्मा पितृत्व परीक्षण उपलब्ध है परंतु बाल विकास के क्षेत्र में आज भी मूल्यांकन के लिए प्रमापीकृत परीक्षण उपलब्ध नहीं है।

(8) असामान्य बालकों का अध्ययन

जब बालों की शारीरिक और मानसिक योग्यता और विशेषताओं का विकास दोषपूर्ण ढंग से होता है तो बालक के व्यवहार और व्यक्तित्व में असमानता के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं बाल विकास में इन विभिन्न असमानता व इनके कारणों और गतिशीलता का अध्ययन होता है|

* प्रमुख असमानता है इस प्रकार हैं बौद्धिक , समस्यात्मक बालक, दुर्बलता, रोगी बालक तथा अपराधी बालक आदि।

* विकास के और सामान क्रमिक परिवर्तनों में अंतर्निहित कौन-कौन से प्रक्रियाएं और मैकेनिज्म हैं आदि समस्याओं का अध्ययन आज के आधुनिक बाल विकास विषय के क्षेत्र के अंतर्गत हो रहा है।

(9) समायोजन संबंधी समस्याएँ-

बाल विकास में बालक के विभिन्न प्रकार की समायोजन समस्याओं का अध्ययन भी किया जाता है साथ ही साथ इस समस्या का अध्ययन भी किया जाता है कि भिन्न-भिन्न समायोजन

क्षेत्र पारिवारिक समायोजन संवेगात्मक समायोजन शैक्षिक समायोजन स्वास्थ्य समायोजन आदि। मैं भिन्न-भिन्न आयु स्तरों पर बालक का क्या और किस प्रकार का समायोजन है।

(10) विकास के नियम और सिद्धांत

बाल विकास अध्ययनों का मुख्य उद्देश्य सामान्य बालकों के विकास प्रतिमान ओं का अध्ययन करना है तथा इनके कारणों की जांच करना है इस दिशा में ऐसे अध्यायों का अभाव है जो प्रथम विकास अवस्था से अंतिम विकास अवस्था तक हो अभिवृद्धि और विकास के चलते रहने से व्यक्ति में सक्रियता और उसका जीवन चलता रहता है

(11) चरित्र का विकास-

चरित्र बालक के अनेक गुणों का योग है यह गुण उसके आदर्शों बाह्य व्यवहार और अभिवृत्तियों आदि से संबंधित होता है बालक जब विद्यालय जाना प्रारंभ करता है तब उसे थोड़ा बहुत उचित अनुचित का ज्ञान हो जाता है बाल्यावस्था की समाप्ति तक उसे अनेक नैतिक मूल्यों का ज्ञान हो जाता है|

* सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अधिगम का महत्व नैतिक विकास प्रतिमान नैतिक विकास की अवधारणा नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक और दुराचार आदि का अध्ययन चरित्र के विकास के अंतर्गत बाल विकास में किया जाता है।

(12) सृजनात्मकता का विकास -

सृजनात्मकता की लोकप्रियता पर भाषाओं में इस बात पर बल दिया जाता है की सृजनात्मकता में कुछ नवीन और भिन्न चीज का निर्माण होता है अतः व्यक्ति के उत्पादन या उसकी रचना से सृजनात्मकता का मापन किया जा सकता है परंतु सदैव यह आवश्यक नहीं होता है कि सृजनात्मकता से उत्पादन ही होता है

* सृजनात्मकता का बुद्धि से संबंध सृजनात्मकता और व्यक्तित्व बालकों के लिए सृजनात्मकता का महत्व सृजनात्मकता का विकास सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारक आदि समस्याओं का अध्ययन बाल विकास बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है ।

(13) बाल्यावस्था की रुचियां

रुचियां एक प्रकार के सीखे हुई अभिप्रेरणा हैं बालक के जीवन में दुखियों का महत्वपूर्ण स्थान है और कार्य भी है क्योंकि व्यक्ति जो कुछ भी करता है यह बहुत कुछ उसकी

रुचि द्वारा ही निर्धारित होता है जब एक व्यक्ति अपनी पसंद के आधार पर कार्य चुनाव के लिए स्वतंत्र होता है तब वह रुचि को महत्व देता है|

* बाल्यावस्था में रुचिओं का विकास बालकों की रुचिओं को ज्ञात करने की विधियां बाल्यावस्था की प्रमुख रुचियां आदि समस्याओं का अध्ययन बाल विकास बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र के अंतर्गत किया जाता है।

(14) अभिभावक बालक संबंध-

बालक के व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में अभिभावकों और परिवारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है बालक को मां से वंचित रख कर जो अध्ययन हुए हैं उनसे यह तथ्य प्रकाश में आया है कि बालक के विकास पर प्रारंभिक परिवारिक अनुभवों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

* अभिभावक बालक संबंध का विकास ,अभिभावक बालकों के संबंधों के निर्धारण, पारिवारिक संबंधों में ह्रास आदि ।समस्याओं का अध्ययन बाल मनोविज्ञान बाल विकास मनोविज्ञान के क्षेत्र के अंतर्गत किया जाता है ।

(15) अन्य समस्याएं-

बाल विकास में अन्य अनेक समस्याओं का अध्ययन भी किया जाता है जैसे वंशानुक्रम से संबंधित समस्याएं, प्रशिक्षण से संबंधित समस्याएं, सामाजिक अधिगम तथा कौशलों आदि के अधिगम से संबंधित समस्याएं ,बालक के समाजीकरण से संबंधित समस्याएं ,बालक के व्यक्तित्व से संबंधित समस्याएं आदि|